

विवेकी राय के कहानी साहित्य में आंचलिकता का स्वरूप

डॉ. वर्षा रानी

सहायक प्राध्यापक, द .आई.सी.एफ.ए.आई. विश्वविद्यालय, रायपुर

Article Info

Article History:

Published: 26 Sept 2026

Publication Issue:

Volume 3, Issue 9
September-2026

Page Number:

497-501

Corresponding Author:

डॉ. वर्षा रानी

Abstract:

विवेकी राय ग्रामीण अंचल से जुड़े कथाकार हैं। इनका जन्म 19 नवम्बर 1924 ई. को गाजीपुर के सोनवानी गाँव में हुआ था। कहानी, उपन्यास, निबंध कविता, संस्मरण आदि सभी विधाओं में इनकी लेखनी अबाध गति से चली। प्रमुख कहानी संग्रह जीवन परिधि, नयी कोयल, अतिथि, कालातीत, गंगा जहाज आदि हैं। इनकी कहानियों में भोजपुर क्षेत्र की आंचलिक संस्कृति दिखाई देती है। जन्म से ही वे गाँव की संस्कृति से प्रेम कर पोषित करने का प्रयास किया है। अपने जीवन के कुछ समय उन्होंने शहर में बिताया लेकिन उनकी आत्मा गाँव में निवास करती थी। उनके द्वारा गाँव के सुख-दुःख, संघर्ष एवं विभिन्न प्रकार की समस्याओं को उन्होंने जाँचा-परखा और भोगा है। गाँव की अभावपूर्ण जिंदगी की उदासीनता को उन्होंने बहुत ही आत्मिक रूप से देखा है। सामन्त वर्ग, जमींदार वर्ग एवं व्यापारी वर्ग द्वारा किये गये षड्यंत्र एवं कृषक वर्ग के जीवन की सरलता, सहजता एवं भोलेपन का उल्लेख उनकी कहानियों में मिलता है। गाँवों की जनता अशिक्षा एवं रूढ़िगत व्यवहार, ईश्वर के प्रति अटूट आस्था एवं विश्वास के साथ षड्यंत्रकारी लोगों का शिकार होती है। पंडितों पुरोहितों एवं धर्म के नाम पर अनेक प्रकार की यातनाएं दिखाई देती हैं जिसे सहने के लिए ग्रामीण जनता विवश।

Keywords: संस्कृति, परम्पराएँ, आंचलिकता, ग्रामीण जीवन, सामंतवर्ग, सामाजिक जीवन, राजनितिक जीवन, संस्कार, शिक्षा, रूढ़िगत व्यवहार, सामन्त वर्ग, संघर्ष।

विवेकी राय की कहानियों में ग्राम परिवेश का सुंदर विवेचन मिलता है। उनकी कहानियों में पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति की छटा हमारे आँखों के सामने नृत्य कर रही है। मन को मोहित करने वाला ग्रामीण परिवेश 'कालातीत' कहानी संग्रह में मिलता है जिसमें प्रकृति माघ और फाल्गुन के माह में दुल्हन की तरह सजी हुई दिखाई देती है "उसकी आँखें पलास वन तक फैल गई। ताम्र कृष्णवर्णी धूमिल झंझाड़। यह फूल क्यों नहीं? लाल-लाल अग्नि स्तवक बिखरे क्यों नहीं?"¹ खेत की हरियाली, पुष्प, फलियाँ और उनके ऊपर मंडराती हुई तितलियाँ एवं भौंरे हवा के साथ फैलती खुशबू मन को अत्यंत मुग्ध करती है। इसी समय आम में फल आने लगे हैं जिसका सुखद विवेचना 'कालातीत' कहानी संग्रह में मिलता है "आम के टिकोरे, मधुमय भौंरे, महुए की रस से सनी हुयी छितराई फलियाँ, उड़ती तितलियाँ छिपकर कलेजा किकोरती कोयलिया और सुनसान की गीली पुरवइया को झेलते इस तरह वहाँ जाने में नहीं लौटने में ये धधकते होते हैं।"² सुरम्य प्राकृतिक सौंदर्य राय जी के कथा लेखन में जगह-जगह दिखाई देता है। नदियाँ मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं पूर्वी भारत में अनेक नदियाँ बहती हैं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में विभिन्न नदियों में गंगा नदी का महत्वपूर्ण स्थान है जो धार्मिक नदी है। लोग इसमें स्नान कर अपने पापों से मुक्त होते हैं ऐसी धार्मिक मान्यता है। ग्रामीण जन बड़ी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ गंगा स्नान करते हैं। 'कालातीत' कहानी संग्रह में 'गोता' कहानी में कहा गया है "गंगा की धवल हिलोरे देख उसका मन लहराने लगा एक और गोता लगाया, जय गंगे।"³

ग्राम परिवेश के अंतर्गत मानव समाज का रहन-सहन, घर, खाद्य सामग्री, वेश-भूषा, साज-सज्जा हेतु सामग्री, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक मान्यताएँ सम्मिलित होती हैं। आंचलिक साहित्य में लोक से जुड़े सभी पहलुओं का दिग्दर्शन होता है। विवेकी राय पूर्णतः आंचलिक कथाकार कहे जाते हैं उन्होंने अपने आस-पास के परिवेश को कहानियों में उकेरा है। गाँव के बदलते परिवेश को अपने खुले चक्षुओं से देखकर, भोगकर तल्लीनता के साथ समर्पित भाव से साहित्य में समाहित किया है "गाँव से जिनका जीवन्त सम्पर्क बना हुआ है। वे शायद हिन्दी के एकमात्र कहानीकार हैं जो आज भी गाँव पर पहले जैसी तल्लीनता और समर्पित भाव से लिख रहे हैं।"⁴

बरसात का मौसम आने से गरीब को कहीं पर चैन सुकून नहीं मिलता है। यह मौसम जहाँ एक ओर अमीर वर्ग को खुशियाँ देता है वहीं दूसरी ओर गरीब को कष्ट देता है। उसके घर कच्चे मिट्टी के बने होते हैं उनमें खपरैली छत होती है जिससे बारिस का पानी उनके घरों में आ जाता है। वह योद्धा की भाँति पानी से लड़ता है तो कभी गर्मी से लड़ता है और कभी गरीबी से लड़ता है। वह अपने घर में कुछ पल का सुकून महसूस करता है। 'विवेकी राय की श्रेष्ठ कहानियाँ' संग्रह में 'घण्टा' कहानी में प्रदर्शित है "घर के भीतर से खपरैल के रास्ते कई जगह चमचमाता आसमान दिखाई पड़ रहा था। बरसात में जो भीतर पानी गिरा तो दीवारों पर बने नक्से के समान अजीब-अजीब चिन्ह अभी तक मौजूद थे।"⁵ इस प्रकार विवेकी राय की रुचि गरीब और अमीर दोनों वर्ग के लोगों पर थी। गरीब वर्ग के सम्पूर्ण जीवन की गहराइयों को मर्मस्पर्शी ढंग से सहेजने का प्रयास अपनी कहानियों में किया है।

ग्रामीण अंचल के व्यक्तियों के पोषण की बात करें तो यह बहुत ही सोचनीय है। किसान सम्पूर्ण मानव जाति का पोषक या अन्नदाता कहलाता लेकिन वह खुद के भरण-पोषण के लिए असमर्थ दिखता है। सभी खाद्य वस्तुओं साग-सब्जी, आटा, दूध-दही आदि का उत्पादक है लेकिन वह अपने अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इन सबको बेच देता है। वह स्वयं कुपोषण का शिकार दिखाई देता है जिससे उसकी जीविका बहुत दयनीय हो जाती है। खाने के लिए पौष्टिक भोजन और तन ढकने के लिए अच्छा कपड़ा उसके लिए सपना ही रहता है। 'मरछिया' कहानी में देखते हैं "अच्छा खना-पीना तो क्या साधारण सूखा-सूखा भी दोनों जून नियमित शायद ही मिलता है।"⁶ इसी प्रकार का उदाहरण 'अतिथि' कहानी में भी देखने को मिलता है।

भोजपुर क्षेत्र में खाने में लिट्टी का विशेष महत्व है लोग इसको बहुत पसंद करते हैं। इसका वर्णन 'ग्राम मन की भूख' में देखते हैं "खाना मगर बड़ी-बड़ी चुनकर मैं लूँगा। जो एक अधिक बाटी लगी है। उसे मैं खाऊँगा। मुझे तो खूब झूर चुरमुर वाली चाहिए।"⁷ लोग खाने के समय लिट्टी की खूबी की चर्चा करते रहते हैं अर्थात् चर्चा का विषय होती है। 'सत्तू' भोजपुरी अंचल का विशेष खाद्य सामग्री है। यहाँ के लोग गर्मी से बचने के लिए एवं किसानों का भूखे-सूखे का भोजन है। गरीबी में लोग 'सत्तू' खाकर गुजारा करते हैं। 'मेले की तैयारी' कहानी में 'सत्तू' की चर्चा की गयी है "गेहूँ धूप में डाल दिया गया है। सत्तू के लिए चना भिगो दिया गया है। केवल चने का सत्तू बूढ़ी को पसंद नहीं पड़ता। उसमें जो मटर भी मिलाती है।"⁸

ग्रामीण रहन-सहन आर्थाभाव के कारण निम्न स्तर का दिखता है। लोगों के मन में वस्तुओं की दुर्लभता हमेशा कचोटती रहती है। गाँव में कुछ व्यक्तियों के पास ही सम्पन्नता दिखती है। राय की कहानियों में ग्रामीण रहन-सहन का यथार्थ विवेचन मिलता है। 'कठनही' कहानी में इसका परिचय मिलता है "जहाँ कुल सात सौ की आबादी में गाँव भर में एक कुआँ है। मवेशियों के लिए उनकी भाषा में तालाब है। जिसे ग्रामीण अपनी भाषा में गड़ही कहते हैं, जहाँ सिर्फ चार-पाँच मकान मिट्टी के हैं। जहाँ का सबसे अधिक पढ़ा लिखा लड़का इस वर्ष भी नवीं कक्षा में ही है। जहाँ घरों में ताला नहीं लगाया जाता (मगर दूसरे कारणों से) और जहाँ पूरे गाँव में एक ही दुकान है जिस पर सिर्फ बीड़ी, तम्बाकू, सुर्त, नमक, तेल, मिर्चा, और बतासा, कभी-कभी आलू और खरबूजा बिकता है तो आप समझ गये इस भारत को।"⁹ ग्रामीण रहन-सहन अत्यंत दयनीय है। मजदूर, किसान लोगों की गरीबी और हीनता लेखक के मन को विचलित कर देती है। गाँव अंचल में घरों में बिजली का अभाव रहता है। प्रकाश के लिए एवं पंखा चलाने के लिए बिजली नहीं है। लोग खुले आसमान के तले आराम करते हैं। गर्मी के दिनों में पसीने से शरीर लतफत हो जाता है और बारिस के दिनों में मच्छरों की अधिकता से लोग तरह-तरह का जतन करते हैं, तब भी आराम से नीद नहीं ले पाते हैं। मच्छरों को भगाने के लिए गावों में मिट्टी की गोरसी में आग जलाया जाता है। 'इन्द्रधनुष' कहानी में इसका जिक्र किया गया है "मच्छरों के डर से ढेर सी करसी एक जगह कोने में रखकर धुँआ कर दिया गया था।"¹⁰ गाँव में साफ-सफाई का अभाव रहता है एवं फसलों के कारण भी मच्छर अधिक मात्रा में पनपते हैं।

विवाह संस्कार को राय जी अपने कथा लेखन में सम्मिलित किये हैं। गाँव में किसी लड़के या लड़की की शादी की बात होती है तो इसमें माता-पिता की अहम् भूमिका होती है। दोनों पक्ष के माता-पिता मिलकर शादी-ब्याह की बात करते हैं। भोजपुर क्षेत्र में शादी में तिलक महत्वपूर्ण होता है। वर पक्ष अपने लड़के की सामर्थ्य के आधार पर तिलक की माँग करता है। दहेज प्रथा की विकरालता कहानियों में देखते हैं। 'कच्चा गुलाब' कहानी एवं 'छछलोल राय का तिलकोत्सव' में यह प्रथा अपना रूप दिखाती है। कच्चा गुलाब कहानी में इसका वर्णन है। "लड़का एक सौदा हैं पढ़ाई-लिखाई उस सौदे को चोखा बताने का एक बहाना है। पढ़ाई मुख्य नहीं है और शादी भी मुख्य नहीं। मुख्य है उस लड़कों को प्राप्त होने वाला तिलक।"¹¹ दहेज प्रथा के कारण लोग लड़का एवं लड़की में भेद करते हैं। लड़के के जन्म होने पर खुशियाँ मनाते हैं गाजे-बाजे के साथ लड़की होने पर नहीं। इस प्रथा के कारण अनेक मासूम बेटियों की शादी उम्र में अधिक वर के साथ कर दी जाती है जिससे लड़की की जिंदगी बोझिल हो जाती है। बाप भइले मोरे कठबपवा' (कालातीत) कहानी में एक वृद्ध के साथ कम उम्र की बेटी का विवाह होता है "कैसा जंगली समाज है, विवाह बोझ हो गया है। कन्या आज घोर दुःखदायी बनकर जन्म लेती है। वर कन्या के बीच धन दौलत, प्रतिष्ठा, मर्यादा और नाना प्रकार की टीम-टाम विषैली खाईया हैं अभागे और गरीब जिनमें डूबकर मर मिटते हैं।"¹² विवेकी राय की कहानियों में अनमेल विवाह और वृद्ध विवाह के दर्शन होते हैं।

परम्पराएँ किसी भी समाज के विकास में सहायक होती हैं। साहित्यकार रीति-रिवाजों और परम्पराओं को हमेशा घनात्मक भाव से देखने का प्रयास करता है। ये अच्छी और बुरी दोनों रूपों में होती हैं। ग्रामीणजन को परिवर्तन स्वीकार्य नहीं होता है वे रूढ़ियाँ और परम्पराओं का पुराने तरीके से ही अपनाते हैं जिससे अनेक प्रकार की हानियाँ होती हैं। अतः विवेकी राय ने दोनों प्रकार की परम्पराओं को उकेरने का प्रयास किया है जिससे ग्रामांचल का चित्र प्रस्तुत हो सके। भारत में ग्रामीण अंचल संस्कृति के गढ़ माने जाते हैं। भारतीय परम्पराएँ, रीति-रिवाज लोगों में अनेक गुणों का विकास करती हैं। प्रेम, दया, सहयोग सहानुभूति, त्याग, देश-प्रेम जैसे संस्कार उत्पन्न होते हैं। भारतीय संस्कृति में 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा का निर्वहन गाँव में देखने को मिलता है विवेकी राय की कहानी संग्रह 'कालातीत' में संग्रहित 'अतिथि' कहानी में एक गरीब लोकनाथ घर आये पंडित का बड़ी लगन और त्याग से स्वागत करता है "वह सोच भी नहीं सकता था कि चावल बचा लिये जायें। एक तो अतिथि दूसरे खद्दधारी तीसरे कितना तेज निकलता है चेहरे से और चैथे यह कि अपने द्वार की मर्यादा की रक्षा भी तो करनी है।"¹³

गाँवों में शिक्षा की स्थिति पर विवेकी राय ने विचार किया है। गाँवों में अशिक्षा का कारण राजनीति एवं लोगों की गिरती मनोवृत्ति है। इस पर ग्रामीण थोड़ा भी पश्चाताप नहीं करते हैं। गलियों में बच्चे घूमते हुये एवं बेरोजगार दिख जाते हैं। स्कूलों का अभाव, शिक्षकों का अभाव, पढ़ने के प्रति अरुचि और आत्म विश्वास का अभाव, सुविधाओं का अभाव, गरीबी, आदि पर लेखक संवेदना व्यक्त करते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों की स्थित चिंताजनक है। इनके लगभग सभी उपन्यासों और कहानियों में शिक्षक की भूमिका देखी जा सकती है। शिक्षा की गुणवत्ता में कमी और शिक्षक की बेवशी को अंकित किया है। राय भी एक शिक्षक का दायित्व निर्वहन किये हैं उनका विचार है "वर्तमान में शिक्षा की जैसी दुर्गति है उसे देखते हुये क्या आश्चर्य है कि शिक्षा वास्तव में हमारे देश में रह ही न जाए। वास्तविकता यह है कि हमारे देश में यदि किसी की सर्वाधिक दुर्दशा है तो वह शिक्षा ही है।"¹⁴

राय में अपनी कहानी 'मरछिया' और 'रावण' में नारी की दयनीय स्थिति का मार्मिक वर्णन किया है। नारी पात्रों की अधिकता नहीं है लेकिन इनके पात्र ग्रामीण नारी की दयनीय स्थिति को प्रस्तुत करते हैं। साथ ही वैमनस्यता का भाव शहरी महिलाओं की भाँति देखने को मिलती है। इनके नारी पात्र साहसी और कर्मठ हैं। समाज में फैले अत्याचार एवं बुराईयों से लड़ने के लिए दुर्गा का रूप धारण कर संघर्ष करती है। कभी समाज में सहानुभूति की पात्र बनती है। 'चक्र' कहानी में 'हरजिन' वर्ग की स्त्री 'तेतरी' की माँ साहस का प्रदर्शन कर कांग्रेसियों की योजनाओं 'गरीबी हटाओ' और 'गरीबी बढ़ाओ' की पोल खोलती है। ग्रामीण महिलाओं के शोषण, भेदभाव को विवेकी राय ने 'झगड़ा' कहानी

में दिखाया है जिसमें पति द्वारा प्रताड़ित महिला की मनः स्थिति को सामने लाते हैं। 'नयी कोयल' कहानी संग्रह की 'मरछिया' कहानी में मराछो फुआ गांव में सब्जी बेचने का काम करती है। अपने व्यवहार से वह लोगों की प्रिय हो गयी है। वह समर्पित भाव से सभी ग्रामीणों की सेवा करती है। गांव के सभी लोगों पर अपनापन महसूस है। कभी-कभी वह डाँटती भी है "हमारे आगे का जन्मा तू नानी के आगे ननिहाल का बखान करेगा, सब बखिया बघेड़ कर रख दूँगी। हमसे मत टेढ़ की तरह बोलना। तुम्हारे बाप को भी देखा।"¹⁵

ग्रामांचल में शोषण का चक्र अपना आधिपत्य जमा लिया है। इस चक्र से मुक्ति हेतु सम्पूर्ण ग्रामीण रुदन करते दिखाई देते हैं। उसे अपने कर्म पर भरोसा नहीं है बल्कि दैवी शक्ति के चमत्कार का इंतजार कर इस शोषण से निजात पाने की कामना करता है। विवेकी राय ने अपने साहित्य में इन शोषकों की बखिया उधेड़ी है 'नयी कोयल' कहानी संग्रह में 'रावण' कहानी में मजदूरों के प्रति मुंशी का बर्ताव अक्षम्य है। मजदूर वर्ष घर जमींदारों के खेत में कार्य करता है जिससे उसका पेट भी नहीं भरता है। कोई त्यौहार-पर्व आने पर वह अतिरिक्त मजदूरी की माँग करते हैं तो मुंशी चीखने-चिल्लाने लगता है "मुंशी जी आँखे लाल किये गरज उठे यह देखो लूट। तनिक भी इन बेइमानों को तमीज नहीं कि कितनी कटिया हुई और कितनी अंटिया बाँधते हैं। मालूम होता है हम अंधे हैं और मजदूरों की अंटिया उठा-उठाकर अपने बोझ की ओर उसी प्रकार फेंकने लगे जैसे कंस देवकी के नवजात पुत्रों को फेंक रहा हो। सनीचरी पैर पटकती रह गयी। और उसकी अंटिया भी मुंशी ने फेंक दी।"¹⁶ इस प्रकार मजदूर लोग सहम गये और दी गई मजदूरी को लेकर चलता बने। मुंशी शोषक के रूप में अधिक कार्य करते हैं और पारितोषिक नपी तुली देते हैं।

भारतीय सनातन संस्कृति बड़ी समृद्ध है इसमें सबसे अधिक योगदान कृषि संस्कृति का है। भारतीय संस्कृति को हम ग्रामांचलिक संस्कृति भी कह सकते हैं। आधुनिकता का प्रभाव ग्राम संस्कृति पर भी देखने को मिलता है। इस पर विवेकी राय अपनी संवेदना जाहिर करते हैं। वैश्वीकरण के युग में विकृति का प्रभाव प्रत्येक जगह दिखता है इससे हमारी संस्कृति भी वंचित नहीं है। हमारे धर्म, ईश्वर, कर्मकाण्ड, आध्यात्म, जीवन मूल्य, नैतिकता, व्रत, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज, आदि का सम्बंध संस्कृति से है। इस पर शहरी संस्कृति अपनी छाप छोड़ने का प्रयास कर रही है। ग्रामीण संस्कृति आज हास-परिहास का केन्द्र बनती जा रही है। पुनीत, पुरातन, अविकृत संस्कृति को ढूँढ़ना मुश्किल है फिर भी गाँव इसको जीवित और विकसित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रामीण अशिक्षित अभावपूर्ण जिंदगी जीकर भी अपनी संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन में तत्पर दिखते हैं।

ग्रामीण आंचलिक संस्कृति में मेलों का विशेष महत्व होता है जिसे विवेकी राय अपने कहानियों में दर्शाते हैं। लगभग प्रत्येक त्यौहार में मेलों का प्रचलन है। ग्रामीण जीवन में मेलों की महत्ता बढ़ने के कई कारण हैं। जीवनोपयोगी वस्तुओं की आपूर्ति जो मेलों के द्वारा होती है। मेले बाजार का रूप ले लेते हैं और गाँवों में मनोरंजन के साधनों की आपूर्ति करते हैं। मेलों में बच्चों और स्त्रियों की महती भूमिका है। स्त्रियाँ साज-शृंगार और गाने-बजाने के साथ भाग लेती हैं और बच्चों की खुशी का ठिकाना नहीं होता है। 'कालातीत' कहानी संग्रह में 'स्वयं मेले' कहानी में यह दृश्य प्रस्तुत है। "तीन भाई दो बहन, माँ-बाप के साथ वह मेला जा रही हैं मानों कटे हुए बैसाख के वीरान खेतों में उल्लास बोती जा रही है। उसका जीवन छोटा है परंतु उसका सुख छोटा नहीं है।"¹⁷ इसी प्रकार 'नयी कोयल' कहानी संग्रह में 'मेले की तैयारी' में उत्साहित ग्रामीणजन के मनोभावों का सुंदर दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

निष्कर्ष -इस प्रकार इनकी कहानियों में ग्रामांचल की सामाजिक संवेदना की सहज अभिव्यक्ति मिलती है। ग्रामीण परिवेश की यथार्थता को अपने अनुभवों के आधार पर स्पष्ट करते हैं। इनकी कहानियों को पढ़ने से ग्राम परिवेश आँखों के सामने घूमने लगता है। सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपनी लेखनी चलाई है। समाज में फैली कुरीतियों, आडम्बरों को कहानियों में लिखकर लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते हैं। शोषण के प्रति लोगों को सचेत करना चाहते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ -

1. विवेकी राय. कालातीत (गोता). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं., 1982, पृष्ठ संख्या – 21.
2. विवेकी राय. कालातीत (गोता). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं. 1982, पृष्ठ संख्या – 21.
3. विवेकी राय. कालातीत (गोता). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं., 1982, पृष्ठ संख्या -77.
4. वेद प्रकाश अभिताभ, अक्षर बीज की हरियाली. पृष्ठ संख्या – 38.
5. विवेकी राय. विवेकी राय की श्रेष्ठ कहानियाँ (घण्टा). पृष्ठ संख्या – 50.
6. विवेकी राय. मरछिया (नयी कोयल). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या – 10.
7. विवेकी राय. नयी कोयल (ग्राम मन की भूख). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या – 62, 63.
8. विवेकी राय. नयी कोयल (मेले की तैयारी). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या - 72- 73,
9. विवेकी राय, नयी कोयल (कठ नहीं). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या – 193,
10. विवेकी राय. कालातीत (इन्द्रधनुष). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं. 1982, पृष्ठ संख्या – 10,
11. विवेकी राय. नयी कोयल (कच्चा गुलाब). राजीव प्रकाशन, इलाहाबाद. प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या – 33.
12. विवेकी राय. कालातीत (बाप भइले मोरे कठ बपवा). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं. 1982, पृष्ठ संख्या – 34.
13. विवेकी राय. कालातीत (अतिथि). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं. 1982, पृष्ठ संख्या - 45.
14. अनिल कुमार आंजनेय, सृजन यज्ञ जारी है, पृष्ठ संख्या – 56.
15. विवेकी राय. नयी कोयल (मरछिया). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984 पृष्ठ संख्या – 14.
16. विवेकी राय. नयी कोयल (रावण). इलाहाबाद : राजीव प्रकाशन, प्र.सं. 1984, पृष्ठ संख्या - 27-28.
17. विवेकी राय. कालातीत (स्वयं मेले). दिल्ली : पराग प्रकाशन, प्र.सं. 1982, पृष्ठ संख्या – 65.